पाठ- 7 : एक था पेड़ एक था ठूंठ

मूल भाव

यह एक विचारात्मक और चिंतन प्रधान ललित निबंध है। इसके लेखक कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर हैं। इस पाठ में जीवन के कुछ सूत्र दिए गए हैं। जीवन में परिस्थितियों से समझौता करना एक सीमा तक ज़रूरी है। जीवन में व्यावहारिकता का महत्व है। एक पेड़ की जड़ के समान हमें अपने आदर्शों और सिद्धांतों पर दृढ़ रहना चाहिए और हवा में झूमते पेड़ के समान समन्वयवादी होना चाहिए। विपरीत परिस्थितियों में विवेक से काम लेना चाहिए तथा परिस्थितियों से समझौता सोच-समझ कर करना चाहिए। परस्पर संवाद-अर्थात् अपनी बात कहना और दूसरों को सुनना जीवन में बहुत महत्वपूर्ण है। जीवन में सकारात्मक होना चाहिए। कुल मिलाकर मनुष्य जीवन को सुंदर कैसे बनाएं, इसका विवेचन यहां किया गया है।

विषयवस्तु

- इस निबंध में लेखक ने एक रमणीक पहाड़ी स्थल का ज़िक्र किया है। लेखक वहाँ एक मकान में ठहरता है और खिड़की से वह एक बाँझ के पेड़ को बड़े ध्यान से देखता है, फिर शुरू होता है उसके विचारों का सिलसिला। ये विचार एक-एक कर प्रश्नों के रूप में उसके सामने आते-जाते हैं और वह उनका उत्तर ढूँढ़ता चलता है।

- बाँझ के पेड़ को देखकर सबसे पहले लेखक को महसूस होता है जैसे उसका कोई दोस्त सामने आकर खड़ा हो गया है और उसके हाल-चाल पूछ रहा है। जैसे ही हवा का तेज़ झोंका आता है, पेड़ झूमने लगता है। अब लेखक को पेड़ में और रस आने लगता है। तभी अचानक लेखक का ध्यान दूर निचाई पर दूसरे पेड़ की ओर जाता है, जो बिल्कुल सूख चुका है, मर चुका है, ठूँठ बन चुका है। उसमें अब जीवन शेष नहीं है।

- ठूँठ मानो पेड़ का कंकाल है, जैसा कि एक न एक दिन हम सबको होना है। लेखक दोनों पेड़ों की तुलना करता है और पाता है कि तेज़ हवा के झोंके से हरा-भरा पेड़ तो खूब झूमता है, पर ठूँठ वैसे-का-वैसा ही खड़ा रहता है। उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। लेखक सोचता है कि 'न हिलना न झुकना' तो वीरों की दृढ़ता की निशानी है। पर यह ठूँठ तो निर्जीव है जिसमें जीवन ही नहीं, वह वीर और दृढ़ कैसा! इसी प्रकार के तर्क-जाल में फँसते हुए लेखक सोचने लगता है कि हरे-भरे पेड़ की तरह, जिसमें जीवन है उसे कठिन परिस्थितियाँ आने पर उनका सामना करना चाहिए। उनसे समझौता करते रहना चाहिए। पर यह तो कोई बात नहीं हुई कि कोई भी समस्या आई और तुरंत समझौता कर लिया।

- लेखक ने जीवन जीने की पद्धति को कहा-कह, सुन। यानी यदि सलीके से जीवन व्यतीत करना है तो अपनी बात को दूसरों तक पहुँचाना होगा और दूसरों की बातों को ध्यानपूर्वक सुनना होगा। यदि विश्व की यात्रा पूर्ण करनी है, तो मान-मना के रास्ते पर चलना होगा।

- यदि इन तीनों का मिला-जुला रूप आपके व्यवहार में उपस्थित है, तो आप एक हिलते-डुलते, हरे-भरे वृक्ष के समान जीवन में परिस्थितियों से, समस्याओं से समझौता कर सकते हैं अन्यथा आपमें और उस मरे हुए सूखे वृक्ष के ठूँठ में कोई अंतर नहीं है। ऐसे व्यक्ति जो निर्जीव, दूसरे वृक्ष के समान कंकाल और रावण के समान ज़िद्दी होते हैं, न किसी को कुछ देते हैं न किसी से कुछ लेते हैं, न किसी से कुछ कहते हैं न किसी की सुनते हैं, न किसी की मानते हैं न किसी को मनाते हैं। सिर्फ़ अपने निर्णय को स्वीकार करते हैं, अपनी चलाते हैं। ऐसे व्यक्ति जीवन जीते हुए भी सूखे ठूँठ के समान होते हैं। ऐसे व्यक्तियों का सिर्फ़ एक ही इलाज होता है - कुल्हाड़ी और कुदाल।

- निष्कर्ष है कि परेशानियों से समझौता करो, वह भी एक सीमा तक अर्थात् जहाँ तक झुक सकते हो झुको

पर इतना भी नहीं कि टूट जाओ। परंतु उसके साथ अपने आदर्शों पर दृढ़ रहो, अपने सिद्धांतों से मत हिलो, जैसे व्यक्ति का शरीर बदलता रहता है पर आत्मा अमर होती है। ठीक उसी प्रकार जीवित व्यक्ति वही है जो परिस्थितियों को समझे और उसके अनुसार अपने को ढाले। जहाँ जितना झुकना चाहिए वहाँ उतना झुको जहाँ अपने आदर्शों पर दृढ़ रहना चाहिए वहाँ दृढ़ रहो। सदैव समय का ध्यान रखते हुए समुचित स्थान पर विवेकपूर्ण निर्णय लो। इन बातों का जो ध्यान नहीं रखता वह अड़ियल कहलाता है, पेड़ का ठूँठ कहलाता है, निर्जीव जड़ कहलाता है। उसमें जीवन की दृढ़ता नहीं होती है।

- हमारी यह जीवन-दृढ़ता ही हमारी पहचान बनाती है जो अपनी संस्कृति, अपनी परंपरा, अपनी विशेषता और सिद्धांतों पर दृढ़ बने रहकर स्थापित होती है। सत्य और आदर्शों पर चलना सिखाती है। जीवन में अपने सिद्धांतों पर डटे रहना और उचित समय पर झुकना ही जीवन है।

शिल्प सौंदर्य

- यह निबंध प्रश्नोत्तर शैली में लिखा गया है।लेखक विषय को बहुत ही सामान्य ढंग से शुरू करता है और एक-एक दृश्य को देखकर प्रश्न उठाता है उसका उत्तर खोजता है, फिर प्रश्न उठाता है और फिर उत्तर खोजता है। परंतु कहीं-कहीं पर उसे उचित उत्तर नहीं मिलता तो वह प्रश्न पर प्रति-प्रश्न करता है इस प्रकार लगातार कई प्रश्नों पर एक साथ चिंतन करते हुए ठोस परिणाम पर पहुँचता है। उदाहरण 'जो न हिलता है न झुकता है वह ही वीर पुरुष है। उसी समय उसका ध्यान उस ठूँठ की ओर जाता है जो न हिलता है न झुकता है परंतु वह तो वीर नहीं है उसमें जान ही नहीं फिर वीर कैसा!' इसी को प्रश्नोत्तरी शैली कहते हैं।

- इसमें विचारों का सिलसिला चलता चला गया है जो कि चिंतन से युक्त है, अतः चिंतन प्रधान शैली में लिखा गया यह एक ललित निबंध है। यह निबंध आम बोलचाल की सरल भाषा में लिखा गया है परंतु इसका विषय जटिल है।

- लेखक ने नवीन शब्दावली का प्रयोग कर भाषा को अत्यधिक लालित्यपूर्ण और प्रभावी बना दिया है। नए शब्दों पर ध्यान दीजिए-डिक्टेटरी-अधिनायकता।

- सूत्र वाक्यों का प्रयोग करते हुए यह ललित निबंध सरस और प्रभावपूर्ण ढंग से लिखा गया है।

- लोकोक्तियों का रचनाकार ने स्थान-स्थान पर सटीक प्रयोग किया है। 'विश्व की जीवन प्रणाली है-कह, सुन। विश्व की यात्रा का पथ है-मान, मना, 'न हिलना न झुकना जीवन की स्थिरता का, दृढ़ता का चिह्न है', 'हिलना और झुकना ही जीवन का चिह्न है', 'जीवन की स्थिरता दृढ़ता जीवन के नकली सत्य हैं', 'हम दृढ़ हों, जड़ नहीं', 'एक है जीवंत दृढ़ता और दूसरा निर्जीव जड़ता', 'जीवन वह है, जो समय पर अड़ भी सकता है और समय पर झुक भी', 'देह है नाशशील और आत्मा है शाश्वत।'

- इस पाठ में लेखक ने अपनी भाषा में प्रवाह लाने के लिए एक और शैली भी अपनाई है-वह है, उदाहरण शैली। अपनी बात को कहते-कहते वह प्राचीन भारतीय और विदेशी परंपरा, संस्कृति और इतिहास से जुड़े व्यक्तियों को उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत करते चलते हैं, जैसे-रावण, स्टालिन, हिटलर आदि। आप राम कथा से जुड़े रावण के चरित्रा से भली-भाँति परिचित हैं और यह भी जानते हैं कि अपने अड़ियल और ज़िद्दी व्यवहार के कारण ही राम-रावण युद्ध हुआ जिससे अहंकारी रावण का अंत हो गया।

अपना मूल्यांकन करें

1. इस पाठ की शीर्षक की सार्थकता सिद्ध कीजिये ।
2. निबंध से आपको क्या शिक्षा मिलती है? अपने जीवन से उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिये ।
3. निबंध के सारांश को अपने शब्दों में प्रस्तुत कीजिये।